9 अप्रैल, राहुल के जन्मदिन पर विशेष

राहुल जी और नयी चेतना का प्रसार

महापंडित राहुल सांकृत्यान ने देश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के आधुनिकीकरण के संघर्ष के जटिल एवं एवं अंतरविरोधग्रस्त दौर में काम करना शुरू किया। राजनीतिक दृष्टि से वह राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के नये दौर की शुरुआत थी। स्वाधीनता संग्राम की मुख्य धारा कांग्रेस, ब्रिटिश-साम्राज्य के प्रति अपना 'असहयोग' का रुख अपना रही थी। प्रथम विश्वयद्ध की समाप्ति के साथ भारत में युद्धजन्य आर्थिक के विस्फोट के की पृष्ठभूमि में मज़दूर-किसान आंदोलन शुरू हो रहा था।

मज़दूर संगठनों की सक्रियता, हड़तालों का सिलसिला, किसानों का विद्रोह आदि बता रहे थे कि देश की जनता देश की जनता के निचले तबकों तक स्वाधीनता और अपने अधिकारों की चेतना पहुंच रही थी। 1917 में हुई रूसी समाजवादी क्रांति ने आजादी का नया अर्थ और उसे पाने का नया रास्ता भी दिखा दिया था, जिसका असर हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम और विभिन्न जनसंघर्षों पर पड़ने लगा था। उससे प्रेरित और प्रभावित नयी पीढ़ी नये रास्ते को तलाशने लगी थी। प्रेमचंद ने 1919 में 'पुराना जमाना और नया जमाना' शीर्षक लेख में लिखा था कि हिमालय के उत्तर में जो नयी सभ्यता प्रकट हुई है, उसे हिमालय के इस पार दक्षिण में आने से कोई रोक नहीं सकता।

कांग्रेस के मंच से भी राष्ट्रों के आत्मनिर्णय की बात की जाने लगी थी। सामाजिक रूप से भारतीय समाज भारतीय समाज की बुराइयों और प्रतिगामी विभेदों के खिलाफ़ स्वामी दयानंद सरस्वती का सुधारवादी आंदोलन अपने प्रभाव के दौर से गुजर रहा था। साहित्यिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक दृष्टि से भारतीय नवजागरण हिंदी क्षेत्र में भारतेंदु से होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी से होते हुए प्रेमचंद के जरिये अपनी विशिष्टताओं के साथ विकसित हो रहा था।

राहुल जी इस अवस्था में मंच पर आये और एक खुले दिमाग से, किंतु बेहद जागरूक दृष्टि के साथ। राहुल जी ने इनके साथ अपनी यात्रा शुरू की, लेकिन इन सबसे अलग ढंग से। उन्होंने किसी के निष्कर्ष को कबूल नहीं किया। बल्कि स्वयं पूरी राजनीतिक, सामाजिक और एवं बौद्धिक प्रक्रिया को परख कर अपना निष्कर्ष हासिल किया। राहुल जी जीवन यात्रा, उनकी वैचारिक यात्रा भी है। इस यात्रा में अपने अपने अनुभवों के विश्लेषण के आधार पर भारतीय समाज की समस्त सामाजिक-सांस्कृतिक विकास-यात्रा को समझने का प्रयास किया और इस तरह उन्होंने अपने जीवन और विचारधारा में एकता कायम की। वह कालिदास के कथन 'मूढ़: परप्रत्येक वा' को मानते थे। उन्होंने 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' में एक जगह आगे बढ़ने और बढ़ाने के लिए ध्यान देने लायक सूत्र दिया है। उन्होंने बतलाया है कि एक है 'अक्ल' और दूसरी है 'नकल'। अक्ल से काम लेने वाला आगे बढ़ता है, नकल करने वाला रूढ़ियों का शिकार हो कर पूर्वजों की जगह पर ही रह जाता है। यहां आगे बढ़ना सामाजिक एवं बौद्धिक विकास के क्षेत्र में है।

राहुल जी ने पूर्वजों के हर मुकाम को देखा, परखा, उसकी उपलब्धियों और सीमाओं को समझा। उपलब्धियों को कबूल किया और सीमाओं को तोड़ा। इस तरह उन्होंने नयी चेतना प्राप्त की और उसका प्रसार किया।

नयी चेतना को फैलाने में राहुल जी ने जितना काम किया है, उतना किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं।

अपने गांव से भाग कर बदरी, केदार, वाराणसी, से छपरा के मठ तक और फिर वहां से तिब्बत, श्रीलंका होकर सोवियत संघ तक राहुल जी की रोमांचक यात्रा भौगोलिक होने के साथ-साथ महान बौद्धिक-सांस्कृतिक यात्रा भी है, जो वैश्णव रूढ़िवाद, आर्य समाजी सुधारवाद, बौद्ध मानवतावाद से गुजरते हुए वैज्ञानिक समाजवाद और मार्क्सवाद तक पहुंचती है।

इसलिए राहुल जी के व्यक्तित्व में वह क्षमता थी कि वह समस्त भारतीय मनीषा का प्रतिनिध्व कर सकें। उनमें प्राचीन भारतीय ऋषि का उदात्त त्याग, महात्मा बुद्ध की तार्किकता, स्वामी दयानंद की रूढ़ि भंजकता, इस्लाम के समता भाव आदि का समाहार तो मिलता ही है। साथ ही इनके अंतर्विरोधों का वैज्ञानिक समाधान भी मिलता है। इस बात पर गौर करके ही हम समझ सकते हैं कि वह कौन सी नयी चेतना है, जिसके प्रसार में राहुल जी ने अपना जीवन होम कर दिया। जाहिर है, राहुल जी ने जिस नयी चेतना का प्रसार किया, उसका संबंध ऐतिहासिक रूप से प्रागैतिहासिक गह्वरों ले कर आज के वैज्ञानिक चमत्कारों तक से है।

राहुल जी ने देश के विकास को सच्चे देशभक्त की तरह सबसे ऊपर समझा। इलिए देश की जनता का ध्यान देश और जीवन की समस्याओं से हटा कर अदृश्य में फंसा देने वाले दर्शन को उन्होंने राष्ट्र की प्रगति में बाधक समझा। यह बोध उन्हें इसलिए मिलता है कि वह दर्शन को ऐतिहासिक दृष्टि से व्यापक मानवीय फलक पर देखते हैं। वह खुद कहते हैं कि उन्होंने 'दर्शन के विस्तृत भूगोल के मानचित्र पर एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी को देखने की कोशिश' की। धर्म को दर्शन और राष्ट्र की सीमा में बांधने को वह गलत मानते हैं। ऐसा करने से मानव की चेतना और चिंतन शक्ति कुंठित होती है। डॉ. राधाकृष्णन ने भारत के प्राचीन दर्शन के बारे में कहा है कि 'प्राचीन भारत में दर्शन किसी भी दूसरी साइंस या कला का लग्गू-भग्गू न होकर, सदा एक स्वतंत्र स्थान रखता रहा है।' इस पर राहुल जी की यह टिप्पणी है कि 'भारतीय दर्शन साइंस या कला का लग्गू-भग्गू न रहा हो, किंतु धर्म का लग्गू-भग्गू वह सदा से चला आता रहा है और धर्म की गुलामी से बदतर गुलामी और क्या हो सकती है?' राहुल जी ऐसा इसलिए कहते हैं कि क्योंकि धर्म परिवर्तन की गति को नहीं मानता और मानता भी है तो चक्रीय ढंग से। इसमें विकास की, आगे बढ़ने की गुंजाइश नहीं है। आध्यात्मिक चेतना और धर्म प्रभावित दर्शन से मुक्त हो कर राहुल जी आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए, क्योंकि स्वामी दयानंद सरस्वती सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों को तोड़ने और मिटाने का अभियान चला रहे थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी सीमा यह थी कि वैदिक मान्यता के आधार पर वह ऐसा कर रहे थे। वैदिक समाज में जात पांत नहीं थी, भेद-भाव नहीं था, यह तो ठीक है - लेकिन जात पांत और भेद-भाव को वैदिक समाज में लौट जाना संभव नहीं। इसलिए, राहुल जी आगे बढ़ गये। वैदिक कर्मकांड के खिलाफ़ आवाज उठा कर अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेने, दुख के कारण और उपायों की खोज करने के महात्मा बुद्ध के जबरदस्त अभियान ने उनका ध्यान खींचा और वे बौद्ध हो गये। लेकिन वह खुली नज़र के साथ बुद्ध के पास गये थे, इसलिए अपनी समकालीन जरूरतों की दृष्टि से उन पर विचार किया और उनकी सीमा बहुत जल्दी उनकी समझ में आ गई।

राहुल जी के वैचारिक विकास और भारतीय समाज के विकास का यही यही बिंदु एवं यही आवश्कता है, जिससे प्रेरित हो कर राहुल जी और उस समय के अन्य अनेक बुद्धिजीवियों तथा राष्ट्र नेताओं के साथ नयी पीढ़ी का ध्यान भी कार्ल मार्क्स की ओर गया। यही समय है कि जब आजादी के नये रास्ते की खोज करने वाले क्रांतिकारी नौजवानों ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया। यही समय है जब भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों ने वैज्ञानिक समाज को अपना लक्ष्य घोषित कर दिया। इस दौर में मज़दूर आंदोलन अपने लक्ष्य पर तो था ही, किसान भी आंदोलन के लिए बेचैन हो रहे थे।

इन परिस्थितियों में यह एकदम स्वाभाविक ही था कि राहुल जी ने आचार्य नरेन्द्र देव के साथ मिल कर 'कम्युनिस्ट घोषण पत्र' का हिंदी अनुवाद तैयार किया और दोनों मिल कर प्रेमचंद के पास गये सरस्वती प्रेस में उसे छापने के लिए। उसी वर्ष राहुल जी की प्रेरणा से बिहार में सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की गई।

इस श्रृंखला में उन्होंने 1934 में 'साम्यवाद ही क्यों?' नाम से एक पुस्तिका लिखी। उल्लेखनीय है कि इसी प्रकार जय प्रकाश नारायाण ने 'समाजवाद क्यों?' नाम की पुस्तिका थी। दोनों पुस्तकों में नाम के महत्त्व का सन् 34 में भले ही ध्यान न आया हो, पर आगे चल कर तो वह बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। 'समाजवाद क्यों?' का लेखक आगे चल कर समाजवादी व्यवस्था का विरोधी हो गया हो और 'साम्यवाद ही क्यों?' का लेखक जीवन की अंतिम सांस तक भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए संघर्ष करता रहा।

मध्यकालीन या प्राचीन मनुष्य की चेतना धर्म के शासन में चलती है। आधुनिक मनुष्य की चेतना विज्ञान, जनतंत्र मानवी पुरुषार्थ से नियंत्रित होती है और उन्हीं की आवश्यकताओं से विकसित होती है। इस युग में पहली बार मनुष्य सबके ऊपर प्रतिष्ठित हुआ - जब समाजवाद का निर्माण शुरू हुआ। राहुल जी ने भारत में मनुष्य की चेतना को प्राचीनता और मध्यकालीनता से मुक्त हो कर आधुनिक बनाने का अथक प्रयास किया। वैज्ञानिक चेतना की विशेषता है -कारण-कार्य श्रृंखला में सोचना।

राहुल जी ने अनेक स्थानों पर बेहिचक यह लिखा है कि कि धर्म और ईश्वर शोषकों का पक्ष मजबूत करते हैं। इसलिए शोषण मुक्त होने के लिए धर्म और ईश्वर के प्रभाव से मुक्त होना चाहिए। अपने ज्ञान के आधार पर राहुल जी कहते हैं कि समाज के विकास में धर्म और ईश्वर का प्रभाव गलत पड़ा है। धर्म और ईश्वर ने 'हज़ारों विद्या व्यसनियों और विद्वानों के जीवन को समाप्त कर स्वतंत्र विचारों का गला घोंटा। मनुष्य की प्रगति को कम से कम एक हज़ार वर्ष तक के लिये रोक नहीं रखा, बल्कि पहले की प्राप्त सफलताओं के प्रभाव को बहुत कुछ नष्ट कर डाला।'

हमारे देश में स्वातंत्र्योत्तर युग में अनेक विचारकों ने और लेखकों ने अस्तित्ववाद को अत्याधुनिक चिंतन के रूप में अपनाया और प्रचारित किया। मार्क्स का एक समकालीन डेनमार्क का एक प्रखर विचारक था कीर्कगार्द। उसने भी मार्क्स की तरह ही मनुष्य के आये संबंधों के बारे में चिंता प्रकट की और उसका समाधान खोजने की कोशिश की। लेकिन उसने संकट को व्यक्तिगत स्तर पर देखा, इसलिए उसके समाधान लिए सामाजिक स्तर पर प्रयत्न की बात उसके ध्यान में आई ही नहीं। नतीजा यह हुआ कि उसके प्रयत्न की परिणति ईसाई अध्यात्म में हुई और मार्क्स सामाजिक स्तर पर प्रयत्नशील थे, सो उनके प्रयत्न की परिणति समाजवाद एवं अंततः नयी मानवता के सृजन में हुई। राहुल जी जैसे रचनात्मक चिंतन वाले लोग, इसी कारण मार्क्स तक पहुंच कर सही मानों में आधुनिक चेतना प्राप्त करते हैं।

राहुल जी की चेतना का स्वरूप ऐसा है कि उन्हीं के शब्दों में उन्हें इतिहास पुरुष कहा जा सकता है। अनेक पीढ़ियों के ज्ञान, आशा-आकांक्षा आदि का जो सार वर्तमान में हमें मिला है, आगे ले चलने के लिए वही वास्तव में इतिहास पुरुष है। राहुल जी की चेतना हमारे समस्त इतिहास और ऐतिहासिक ज्ञान का सार है, जो हमें भविष्य की दिशा दिखा रहा है।

- डॉ. खगेन्द्र ठाकुर

मायावती और नोटों की माला

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने की खुशी में पार्टी सुप्रीमों और उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री ने बड़ा ही जोरदार जलसा किया। इस जलसे की खासियत यह रही इसमें नोटों की बहुत बड़ी और भारी भरकम माला उन्हें पहनाई गई। यह माला कहां बनी और किसने बनाई, मीडिया में यह चर्चा का विषय बन गया। मायावती के विरोधियों ने इस पर लोकसभा में जम कर हंगामा मचाया और सरकार से यह मांग की इस मामले की सीबीआई अथवा इनकम टैक्स विभाग से जांच कराई जाय। पर विरोधियों की यह औकात कहां कि उनकी मांगों पर ध्यान दिया जाये।

उल्लेखनीय है कि मायावती द्वारा किया गया यह कोई पहला जलसा नहीं है। मायावती जब अपना जन्म दिन मनाती हैं तो उस अवसर पर भी काफ़ी खर्च किया जाता है। जन्म दिन के मौके पर मायावती को करोड़ों-करोड़ रुपयों की थैली उनके समर्थक पेश करते रहे हैं। लेकिन इस वर्ष मौका दूसरा था। पार्टी की 25वीं वर्षगांठ थी। और कुछ ऐसा करना था कि वह मीडिया में विशेष चर्चा का विषय बन जाये। टीवी चैनलों को अच्छा-खासा मसाला मिल जाये। तब यह नोटों की माला पहनने का विचार अनोखा रहा।

वैसे लोग़ इस बात को भली-भांति जानते हैं कि राजनेता अथवा नेत्री 'जनतंत्र' के इस आवरण वाली व्यवस्था में सिक्कों से तोले जाते रहे हैं। कहीं उन्हें हीरा जटित स्वर्ण आभूषण पहनाये जाते हैं तो कहीं बहुमूल्य रत्नों से जटित मुकुट। इन्हें पहनने में सभी दलों के बड़े नेता आगे रहे हैं। लालू-मुलायम-शरद यादव से लेकर आडवाणी और नीतीश से लेकर वर्तमान केंद्रीय सत्ता संचालक सोनिया गांधी तक। पर क्या किया जाये? जब हमाम में सभी नंगे हों तो इन बातों पर कौन ध्यान देता है। इसलिए मायावती को नोटों की माला पहनाये जाने को लेकर कोई बड़ा हंगामा संभव नहीं है।

इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि मायावती ने अपने समर्थकों को यह कह रखा है कि वे भगवान की जगह मंदिरों में उनकी मूर्ति की स्थापना और पूजा करें। जीते जी उन्होंने अपना स्मारक बना ही लिया है अपनी मूर्ति की स्थापना मान्यवर कांशीराम जी एवं आंबेडकर की मूर्तियों के साथ करके। पर यहां यह भूलना नहीं चाहिए कि जयललिता ने भी अपनी मूर्तियों की स्थापना करवाई है और बाकायदा उनकी पूजा भी होती है।

जहां तक मायावती का सवाल है तो उन्होंने 'सोशल इंजीनियरिंग' का इस्तेमाल करके गठबंधनों की राजनीति वाले इस दौर में देश के सबसे बड़े और केंद्रीय राजनीति में सबसे अहम भूमिका वाले राज्य उत्तर प्रदेश की सत्ता बिना कोई गठबंधन बनाये अपने दम पर हासिल किया है। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। मायावती ने सत्ता हासिल करने के लिए सवर्ण जातियों के सम्मेलन तो करवाये ही थे, उनके लिए रिजर्वेशन का मुद्दा भी उठाया था। उन्होंने बसपा को बहुजन समाज नहीं, बल्कि सर्वजन समाज का हितैषी बताया था और अभी भी सर्वजन समाज की ही बातें करती हैं। उनका सपना देश की सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर बैठना यानी प्रधानमंत्री बनना है। वह इस ममले में सोनिया को चुनौती देती नज़र आती हैं। सोनिया खुद प्रधानमंत्री बनना नहीं चाहतीं, बल्कि ऐसा इंतजाम करना चाहती हैं कि अगली बार 'युवराज' राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनें। इसके लिए राजनीतिक प्रशिक्षण उन्हें दिया जा रहा है और पिछले दिनों 'युवराज' ने भी उत्तर प्रदेश के काफ़ी चक्कर काटे हैं एवं ग़रीबों एवं दलितों की झोंपड़ियों में रातें काट कर उन्होंने अच्छा-खासा तमाशा किया। वैसे मायावती का यह मानना है कि 'युवराज' के इन तमाशों से उनका कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है।

- शेष पेज 7 पर